

गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

उद्धरण १४

किसी को कष्ट में देखकर तुम सचमुच क्या महसूस करते हो? क्या तुम बस इतना ही कहते हो, “अरे, मुझे तुम्हारे लिए बड़ा बुरा लग रहा है। काश, तुम्हारे साथ वैसा न हुआ होता।” या तुम सहायता का हाथ आगे बढ़ाते हो? यदि तुम वाकई सहायता करने का प्रयत्न करते हो और अगर बदले में किसी चीज़ की अपेक्षा रखते हो तो वह क्या है?



© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग अध्याय ७ “करुणा,” से उद्धृत [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. १०२।